पुण्यभूमि रामेश्वरम

प्रिया के. एम, तकनीकी सहायक
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, तमिल नाडु

रामेश्वरम चारों ओर से हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ एक द्वीप है। यह जगह तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम जिले में स्थित है। यहाँ के एक प्रसिद्ध मंदिर है रामेश्वरम मंदिर जो हिंदूओं का एक पवित्र मंदिर है। रामेश्वरम मंदिर,"रामनाथस्वामी मंदिर" नाम से भी जाना जाता है। जिस तरह से उत्तर भारत में काशी का महत्व है, ठीक उसी तरह दक्षिण भारत में रामेश्वरम का भी महत्व है।

माना जाता है कि भगवान श्रीराम ने श्रीलंका से लौटते समय महादेव शिव भगवान की इसी स्थान पर पूजा की थी। इन्हीं के नाम पर रामेश्वर मंदिर और रामेश्वर द्वीप का नाम पड़ा। ऐसा कहा जाता है कि रावण का वध करने के बाद भगवान राम अपनी पत्नी सीता देवी के साथ रामेश्वरम के तट पर कदम रखकर ही भारत लौटे थे। एक ब्राह्मण को मारने के दोष को खत्म करने के लिए भगवान

रामेश्वरम मन्दिर के कवाट का दृश्य (फोटो सौजन्य: गूगिल)

रामेश्वरम रेलवे पुल का दृश्य (फोटो सौजन्य: गूगिल)

राम, महादेव शिव की पूजा करना चाहते थे। लेकिन द्वीप में कोई मंदिर नहीं था, इसलिए भगवान शिव की मूर्ति लाने के लिए श्री हनुमान जी को कैलाश पर्वत भेजा गया था। जब हनुमान समय पर शिवलिंग लेकर नहीं पहुँचे तब देवी सीता ने समुद्र की रेत से एक शिवलिंग बनाया और भगवान राम ने उसी शिवलिंग की पूजा की। बाद में हनुमान द्वारा लाए गए शिवलिंग को भी वहीं स्थापित कर दिया गया। रामेश्वरम मंदिर के मध्य भाग में दो शिवलिंग है, एक सीता देवी द्वारा रेत से निर्मित, जिन्हे मंदिर के मुख्य देवता माना जाता है और इन्हे "रामलिंगम" नाम दिया गया है। दूसरा शिवलिंग हनुमान द्वारा कैलास पर्वत से लाया गया है, जो "विश्वलिंगम" नाम से जाना जाता है। भगवान राम के आदेशानुसार हनुमान द्वारा लाए गए शिवलिंग की पूजा सबसे पहले की जाती है।

रामेश्वरम मंदिर का प्रवेश द्वार भारतीय निर्माण कला का एक आकर्षक नमूना है। मंदिर में सैकडों विशाल खंभे हैं और प्रत्येक खंभे पर अलग – अलग तरह की बारीक कलाकृतियाँ बनी है। रामेश्वरम मंदिर के अंदर 22 तीर्थ हैं, जो बहुत प्रसिद्ध हैं। मंदिर के पहले और सबसे मुख्य तीर्थ "अग्नि तीर्थं" नाम से जाना जाता है। मंदिर में सुबह पाँच बजे होने वाले 'स्फटिकलिंग दीप आराधना' बहुत प्रसिद्ध है। इसी तरह रात आठ बजे होने वाले "पल्लियरा पूजा" भी देखने में आनंददायक है। रामेश्वरम मंदिर में फरवरी-मार्च महीने में महा शिवरात्रि त्योहार अद्भुत तरीके से मनाया जाता है जो कुल 10 दिनों तक चलता है।

रामेश्वरम मंदिर के आसपास देखने योग्य कई जगह है, इसमें धनुषकोटी अतिप्रसिद्ध है। यहाँ की समुद्र की सुन्दरता देखने के लिए देश के कोने-कोने से लोग आते है। समुद्र में बनाया गया पांबन पुल भी विश्व प्रसिद्ध है। तमिलनाडु के रामेश्वरम द्वीप को मुख्यभूमी से जोडने वाला एक रेलवे पुल है पांबन। यह सेतु 106 साल पुराना समुद्री सेतु है। पांबन पुल से किए जाने वाला रेलयात्रा भी मन को आनंद देते है। जो लोग पुण्यभूमी रामेश्वरम का दर्शन करते हैं, वे अपने जीवन में एक अविस्मरणीय अनुभव लेकर ही लौटेंगे।